उपसंहार

उपसंहार

सन् 1947 के भारत स्वतंत्रता का आंदोलन और देशविभाजन की घटनाएँ ऐतिहासिकता के दृष्टि से भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण घटना है। समाज के दृष्टा साहित्यकारों ने इन घटनाओं को हिन्दी के साहित्य के केंद्रीय विषय में स्थान दिया है। इन हिन्दी साहित्यकारों में यशपाल का 'झूठा-सच', कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान', भीष्म साहनी 'तमस', इन रचनाकारों मे नासिरा शर्मा का 'जिंदा मुहावरे' यह उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। नासिरा शर्मा जी ने 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में मुस्लिम समाज जीवन की वास्तविक स्थिति के अंतर्गत उनके, विचार संस्कृति, मुस्लिम जीवन के त्रासदी का चित्रांकन किया है। साथ ही मुस्लिम समाज जीवन की कई समस्याओं को यथार्थ रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर उनके जीवन के कटु सत्य को तलाशने का महत् कार्य किया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में हमने नासिरा शर्मा जी के 'सांप्रदायिकता के संदर्भ में 'जिंदा मुहावरें' का मूल्याकन' इस विषय पर अध्ययन किया है। प्रस्तुत लघु शोध में नासिरा शर्मा जी के व्यक्तित्व तथा उनके रचना संसार को जानने के लिए प्रथम अध्याय में उनका जीवन परिचय तथा साहित्य परिचय विस्तृत रूप में तथ्यों के साथ विवेचन तथा विश्लेषण किया है।

नासिरा शर्मा जी का जन्म एक संपन्न मुस्लिम परिवार में सन् 1948 में हिंदी का साहित्यिक केंद्र इलाहाबाद में हुआ। उनका जन्म समृद्ध, साधन संपन्न, सुसंस्कृत एवं उच्च वर्ग परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम प्रो.जमीर अली है। वे उर्दू के प्रोफेसर तथा प्रगतशील विचाधारा के अनुयायी एवं सुप्रसिद्ध कवि थे। नासिरा शर्मा जी की माँ का नाम नाझनीन बेगम था। नासिरा शर्मा अपने जीवन में अपनी माँ को गुरु के रूप में स्वीकृत करती है, अर्थात उनपर हुऐ संस्कार से स्पष्ट है कि नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व पर उनके माता-पिता का प्रभाव दृष्टिगोचर है। उनका बचपन रियासती वातावरण खुशहाली के साथ बीता। उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा इलाहाबाद

में और उनकी उच्च शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से हुई।उनका वैवाहिक जीवन डा.रामचंद्र शर्मा के साथ अंतरधर्मीय प्रेमविवाह के रूप सुस्थिती में मान सम्मान के साथ बीतता जा रहा है। नासिरा शर्मा धर्म निरपेक्षतावादी विचारों की हिमायती है वे सृष्टि में सभी धर्मो में मानव धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानती है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी गुणों से समाहित है/वे हमेशा जीवन में निस्वार्थ भावना के साथ दूसरों की मदद करती है। उनका स्वभाव संवेदनशील, सहयोगी, अतिथ्यशील तथा स्पष्टोक्ति के आदि गुणों से संपन्न है। वह कुशाग्र बुद्धिमानी हिंदी साहित्य जगत में सराहनीय है। उनके साहित्य का अविष्कार कई विधाओं के द्वारा हुआ है। जिसमें उपन्यास कहानी लेख, अनुवाद आदि द्वारा हुआ है।उनका रहन सहन साधारण तौर पर है।उनके रचनाओं के केंद्र में मानव जीवन की हर समस्या को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। साथ ही एक सजग साहित्यकार की दृष्टि से अपनी रचनाओं के द्वारा धर्मनिरपेक्ष समाज व्यवस्था निर्माण करने का प्रयास किया है।उन्होंने मानवीय जीवन की ज्वलंत समस्याओं को सुलझाने के लिए साहित्यिक रचनाओं में मनुष्य की हर समस्याओं का हल प्रस्तुत किया है।

नासिरा शर्मा जी के 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता इस अध्याय के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सांप्रदायिकता के समस्या को नासिरा शर्मा जी ने 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में केंद्रीय विषय के रूप में रेखांकित किया है। भारतीय समाज व्यवस्था में जातिवर्ग पर आधारित इस आधुनिक चेतना के समांतर ही सांप्रदायिकता के आग में जलती मनुष्यता को बचाने का प्रयल नासिरा शर्मा जी के इस उपन्यास में किया है। आज वर्तमान समय में मानव कई समस्याओं से घिरा हुआ है। जिसमें सांप्रदायिकता जैसी भयावह समस्या ने आम आदमी का जीना मुश्किल कर दिया है। प्रस्तुत अध्याय में सांप्रदायिकता का अर्थ, उसका स्वरूप, उसकी परिभाषा को स्पष्ट करते हुए दंगे फसाद, धर्माधता, राजनीति, अंधविश्वास आदि कई समस्याओं को उद्घाटित करने का अथक प्रयास किया है। सांप्रदायिकता की समस्या हर इन्सान के सर पर मौत के साये की तरह मँडराती रहती है। नासिरा शर्मा जी का प्रस्तुत उपन्यास

'जिंदा मुहावरे' ने भारतीय समाज की सांप्रदायिकता को उजागर किया है। मानवीय विपरित परिणामों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न नासिरा शर्मा करती है। धर्म, जात से परे रहकर इन्सान को इन्सान रहने की सलाह एक सामाजिक दायित्व के नाते साहित्यकार कृर्तत्व को निभाते हुए अपने साहित्य सृजन द्वारा सामाजिक परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाने के लिए साहित्य का सृजन करते है।

नासिरा शर्मा जी के 'सांप्रदायिकता के संदर्भ में 'जिंदा मुहावरे' का मूल्यांकन' इस विषय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यास की समस्याओं को रेखांकित किया है। वर्तमान कालीन मनुष्य का जीवन अनेकानेक समस्याओं से उलझा हुआ है। समस्या इस शब्द से तात्पर्य कठिणता या जटिलता का बोध होना। इन्सान जन्मत: कई समस्याओं से संघर्षरत रहता है, फिर भी अपनी जीवन यात्रा सफलता के साथ पूरी करने के लिए प्रयत्नशील है। मानवीय जीवन में व्याप्त कई समस्याओं को उलझाने तथा सुलझाने के लिए नासिरा शर्मा जी ने प्रस्तुत उपन्यास 'जिंदा मुहावरे' में बेकारी की समस्या, अकेलेपन की समस्या, जातिवाद की समस्या, गरिबी की समस्या, प्रेम की समस्या, नारी समस्या आदि समस्याओं के साथ-साथ राजनीतिक समस्या जिसमें दंगे फसाद, आंदोलन की समस्या, आर्थिक समस्या इन समस्याओं को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। नासिरा शर्मा जी 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास के द्वारा मुस्लिम समाज जीवन में चित्रित समस्याओं पर चिंतन करती है।

'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की कथा वस्तु का केंद्रीय विषय है देश विभाजन के पश्चात मुस्लिम समाज जीवन की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उनकी व्यथा को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।नासिरा शर्मा जी ने अपनी अनुभूति को आधार बनाकर प्रस्तुत उपन्यास का सृजन किया है। मुस्लिम समाज जीवन के सत्य को उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा चित्रांकन किया है। उनके 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन करने पर प्रस्तुत उपन्यास का कथ्य, पात्र, देशकाल वातावरण, भाषा की दृष्टि से सशक्त है। नासिरा शर्मा ने प्रस्तुत उपन्यास में मुस्लिम समाज जीवन के चित्रण को

केंद्रीय स्थान पर रखकर सशक्त उपन्यास का निर्माण किया है। वे अपने निश्चित उद्देश्य पूर्ति में सफल हुई है। इसके साथ ही इस उपन्यास के विशेषताओं का चित्रांकन करते हुए देशप्रेम, शहरी परिवेश, सामाजिक स्थिति, आर्थिक विषमता तथा देशविभाजन के पश्चात भारत विभाजन बदलते परिवेश के पहलुओं को उजागर करते हुए शांति और अमन की दृष्टि से निष्पक्ष विचारधारा को प्रस्तुत करने का उद्देश्य रहा है। उपर्युक्त विशेषताओं से समाहित उपन्यास देश विभाजन, सांप्रदायिकता की दृष्टि से सशक्त साहित्यिक कृति के रूप में उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत अध्याय 'जिंदा मुहावरे' के शैल्पिक विवेचन के पश्चात निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा जी के प्रस्तुत उपन्यास का शिल्प सशक्त है। प्रस्तुत अध्याय में शिल्प का अर्थ स्वरूप, परिभाषा को उजागर किया है। शिल्प का विवेचन तथा विश्लेषण करने के उपरांत उसकी भाषा के रूप को स्पष्ट किया है। नासिरा शर्मा के भाषा के विविध रूपों में वर्णनात्मक भाषा, व्यंग्यात्मक भाषा, आवेशात्मक भाषा को भी स्पष्ट किया है। नासिरा शर्मा के 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास के भाषा को सौंदर्य प्रदान करनेवाले प्रयुक्त शब्दों के रूप को स्पष्ट किया है जिसमें तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, अरबी शब्द, फारसी शब्द, अपशब्द, उर्दु शब्द, द्विरूक्त शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द, बिहारी शब्द, अंग्रेजी शब्द, संयुक्त शब्द आदि विविध रूपों को नासिरा शर्मा जी ने उपन्यास के शैल्पिक विवेचन में रेखांकित कर उपन्यास को महत्ता प्राप्त की है। अन्य शब्दों के रूप को अंकित किया है। साथ ही मुहावरे, कहावतें और शैली के विविध रूपों को रेखांकित किया है। शैल्पिक विवेचन के दृष्टि से विवेच्य उपन्यास महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

उपलब्धियाँ :

नासिरा शर्मा जी के "सांप्रदायिकता के संदर्भ में 'जिंदा मुहावरे' का मुल्यांकन" इस विषय के लघु शोध-प्रबंध का अध्ययन करने के पश्चात निम्नलिखित उपलब्धियाँ दिखाई देती हैं।

1 नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व तथा कृतित्व समाजाभिमुख है।

2 प्रस्तुत उपन्यास का कथ्य समाज नवनिर्माण की स्थिति तथा गति पर प्रकाश डालता है।

3 'जिंदा मुहावरे' इस उपन्यास में सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को उजागर किया है।

4 'जिंदा मुहावरे' इस उपन्यास मे लेखिका ने मुस्लिम समाज के त्रासदी का चित्रांकन किया है।

5 प्रस्तुत उपन्यास कथावस्तु, पात्र, देशकाल वातावरण तथा शिल्प की दृष्टि से सशक्त कृति है।

6 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की विशेषताओं में शहरी तथा देशज का चित्रांकन किया है।

7 प्रस्तुत उपन्यास में देश विभाजन के पश्चात मुस्लिम समाज की वास्तविकता को स्पष्ट किया हे।

8 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास पाठकों को गतिशील, विचारशील तथा चिंतनशील बनाने के लिए प्रेरित करता है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

नासिरा शर्मा के 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास पर निम्नलिखित विषयोंपर स्वतंत्र रूप से शोधकार्य किया जा सकता है -

1 ""जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित मुस्लिम समाज जीवन"

2 ""जिंदा मुहावरे' उपन्यास का शैल्पिक अनुशीलन"

3 ""जिंदा मुहावरे' उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी"

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के द्वारा प्राप्त हुए हैं।आशा है भविष्य में उपरोक्त विषयोंपर शोधार्थी स्वतंत्र रूप में शोध कार्य संपन्न करेंगे।